जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 | वर्षः 17 | संख्याः 241 | प्रभात | चूरू, रविवार 28 दिसम्बर, 2025 | पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 | पृष्ठ 8 | मूल्य 2.50 रु.

दिग्विजय सिंह सी.डब्ल्यु.सी. की बैठक में भी गरजे

पर चौंकाने वाली बात यह है कि पूरी बैठक में सभी ने उनकी दहाड़ को चुपचाप, ''पिनड्रॉप साइलैंस'' में सुना

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 दिसंबर। कांग्रेस कार्य समिति की (वर्ष की आखिरी) की बैठक में तब जबरदस्त हंगामा हुआ, जब वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने संगठन के संचालन पर सवाल उठाए।

सीडब्ल्युसी बैठक का आयोजन मनरेगा के नाम बदलने पर चर्चा करने के लिए किया गया था, और उन्होंने चेतावनी दी कि अगर राज्य सरकारें इसे लागू करने के लिए पैसे नहीं जुटा पाती हैं, तो यह ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का अंत कर देगा, क्योंकि अधिकांश राज्य आर्थिक संकटों का सामना कर रहे हैं।

कांग्रेस कार्य समिति के सदस्यों ने इस योजना के नाम बदलने और इसके दायरे को बदलने के खिलाफ विरोध करने की शपथ ली। लेकिन पूरी बैठक को मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने अपने सवालों से लगभग हाइजैक कर लिया, जब उन्होंने संगठन को चलाए जाने पर सवाल उठाया।

क्या उनका हमला राहुल गांधी के प्रॉक्सी माने जाने वाले के.सी. वेणुगोपाल पर था? या फिर राहुल गांधी पर था, जो कभी भी छोटे मुद्दों पर ध्यान नहीं देते? या फिर यह हमला ''जय जगत'' पर था, जो राहुल गांधी पर काफी प्रभाव रखता है? संभवतः इन सभी पर था।

- किसी ने उनका प्रतिवाद नहीं किया, न ही उनके आरोपों के खिलाफ कोई तर्क प्रस्तुत किए।
- क्या, सी.डब्ल्यु.सी. की बैठक में छायी चुप्पी का मतलब है कि पार्टी के अन्य नेता भी दिग्विजय सिंह की राहुल के बारे में तीखी टिप्पणी और पार्टी के कामकाज के तरीके की कटु आलोचना से सहमत हैं।
- राहुल गांधी का कट्टर समर्थक, जय जगत ग्रुप, यहाँ तक कि राहुल गांधी के द्वारा मनोनीत संगठन महासचिव वेणुगोपाल भी चुप क्यों रहे?
- क्या दिग्विजय सिंह अकेले ही हैं, पार्टी व राहुल गांधी के खिलाफ एक तरह से विद्रोह का झंडा उठाने में, या कई और अन्य नेता भी दिग्विजय सिंह के साथ सहानुभूति रखते हैं और दिग्विजय सिंह के साथ हैं।
- पर, सी.डब्ल्यु.सी. के सभी सदस्य, दिग्विजय सिंह के प्रकरण को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं, इसीलिए दिग्विजय सिंह का मसला सी.डब्ल्यु.सी. की बैठक को ''हाइजैक'' करने में सफल हुआ।

दिग्विजय सिंह ने कहा कि आरएसएस एक खतरनाक संगठन है, लेकिन कांग्रेस के पास इसे चुनौती देने की शक्ति नहीं है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस यह संदेश देने में असमर्थ है कि वह भाजपा को चुनौती दे सकती है।

दिग्विजय सिंह ने यह भी कहा कि कांग्रेस का पूरा कामकाज केन्द्रीकृत हो चुका है और पार्टी इस स्थिति को संभालने में सक्षम नहीं है।

दिग्विजय सिंह ने इससे पहले नरेन्द्र मोदी की एक तस्वीर ट्वीट की थी, जिसमें वे एल.के. आडवाणी के चरणों में बैठे नज़र आ रहे थे, और कहा था कि भाजपा और आरएसएस के कार्यकर्ता मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह है भाजपा संगठन की ताकत।

उन्होंने कहा, समस्या कांग्रेस संगठन के साथ है, जो काम नहीं करता है। दिलचस्प बात यह है कि दिग्विजय सिंह ने यह स्पष्ट किया कि वे आरएसएस की तारीफ नहीं कर रहे थे, बल्कि यह बताने की कोशिश कर रहे थे कि कांग्रेस आज कहां खड़ी है।

एक और ट्वीट में, उन्होंने राहुल गांधी की आर्थिक दृष्टिकोण की तारीफ की, लेकिन कहा कि उन्हें कांग्रेस और संगठन पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी को मामलों के बारे में मनाना बहुत कठिन है।

इस बीच, कई सवाल उभरकर सामने आए हैं। क्या दिग्विजय सिंह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

असम में 10.56 लाख वोटर्स के नाम कटे

गुवाहाटी, 27 दिसम्बर। विधानसभा चुनाव से पहले असम में मतदाता सूची को दुरुस्त करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। चुनाव आयोग ने विशेष पुनरीक्षण (स्पेशल रिवीजन) के बाद राज्य की ड्राफ्ट मतदाता सूची जारी कर दी है। इस प्रक्रिया में 10 लाख 56 हजार 291 नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं। चुनाव आयोग का कहना है कि इसका मकसद त्रुटिरहित और पारदर्शी मतदाता सूची तैयार करना है, ताकि आने वाले चुनाव निष्पक्ष तरीके से कराए जा सकें।

चुनाव आयोग की ओर से जारी एकीकृत ड्राफ्ट सूची के अनुसार, असम

- चुनाव आयोग ने एसआईआर के बाद ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी की।

में अब कुल 2 करोड़ 51 लाख 9 हजार 754 पंजीकृत मतदाता हैं। इस आंकड़े में 93 हजार 21 डी-वोटर शामिल नहीं हैं। आयोग ने स्पष्ट किया है कि जिन नामों को हटाया गया है, वे मृत्यु, स्थानांतरण या डुप्लीकेट प्रविष्टियों के कारण सूची में बने हुए थे। इन्हें हटाकर मतदाता सूची को साफ किया गया है।

विशेष पुनरीक्षण के दौरान, कुल 10,56,291 नाम हटाए गए। इनमें से 4,78,992 नाम ऐसे थे, जिन मतदाताओं की मृत्यु हो चुकी थी। वहीं, 5,23,680 मतदाता अपने पंजीकृत पते से दूसरी जगह स्थानांतरित पाए गए। इसके अलावा 53,619 ऐसे नाम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दिग्विजय सिंह आखिर चाहते क्या हैं?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रशंसा और कांग्रेस के वर्किंग स्टाइल की आलोचना

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 दिसम्बर। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने एक नया विवाद खड़ा कर दिया है। ज्ञातव्य है कि एक हफ्ते पहले, उन्होंने पार्टी में सुधार की आवश्यकता के सम्बंध में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को पत्र लिखा था। शनिवार सुबह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 1990 के दशक की एक ब्लैक एंड वाइट फोटो को साझा करते हुए, उन्होंने भाजपा और उसकी वैचारिक मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की तारीफ की, जो विभिन्न मुद्दों पर हमेशा कांग्रेस के निशाने पर रहे हैं।

मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री सिंह ने कॉरा का एक स्क्रीनशॉट पोस्ट किया, जिसमें भाजपा के दिग्गज नेता एल.के. आडवाणी गुजरात में एक कार्यक्रम में भाग लेते दिख रहे हैं। युवा पीएम मोदी को आडवाणी के पास फर्श पर बैठे हुए देखा जा सकता है। इस तस्वीर को लेकर, कांग्रेस नेता ने बताया कि आरएसएस और भाजपा के सामान्य कार्यकर्ता, जो कभी जमीन पर बैठते थे, वे संघ-भाजपा के पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) में आगे बढ़कर किस तरह मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बन सकते हैं।

- दिग्विजय सिंह ने प्र.मंत्री मोदी की एक फोटो शेयर की, जिसमें वर्ष 1996 में गुजरात में हुए एक कार्यक्रम में एल.के. आडवानी कुर्सी पर बैठे और मोदी उनके पास ज़मीन पर बैठे दिख रहे हैं।
- फोटो के साथ दिग्विजय सिंह लिखते हैं कि संघ के संगठन का इको सिस्टम ऐसा है कि एक साधारण कार्यकर्ता भी मुख्यमंत्री और यहाँ तक कि प्रधानमंत्री भी बन सकता है।
- इससे पहले दिग्विजय सिंह ने कांग्रेस, खासकर राहुल के बारे में एक्स पर लिखा और कहा, राहुल जी सामाजिक, आर्थिक मसलों पर आपकी सोच सटीक है, लेकिन जरा कांग्रेस के संगठन पर भी ध्यान दीजिए।
- इसी पोस्ट में वे लिखते हैं कि राहुल को मनाना बेहद कठिन है।

सिंह ने एक्स पर लिखा, ''मुझे यह तस्वीर कॉरा साइट पर मिली। यह बहुत प्रभावशाली है। जिस तरह से आरएसएस के जमीन से जुड़े स्वयंसेवक और जनसंघ-भाजपा के कार्यकर्ता नेताओं के चरणों में बैठते हैं, और राज्य के मुख्यमंत्री और देश के प्रधानमंत्री बन जाते हैं, वह संगठन की शक्ति है। जय सिया राम।''

सिंह द्वारा साझा की गई फोटो 1990 के दशक की एक विशिष्ट फोटो है, जो गुजरात की राजनीति में प्र.मंत्री मोदी के उदय और उभार को दर्शाती है। यह तस्वीर 1996 में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान ली गई बताई जाती है, जिसमें उस समय के शीर्ष भाजपा नेता शामिल हुये थे।

भाजपा ने सिंह के ट्वीट पर विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तंज किया है। पार्टी प्रवक्ता सी.आर. केशवन ने कहा कि सिंह की टिप्पणी ने ''तानाशाह और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लीपा-पोती कर राज्यसभा में नया टर्म चाहते हैं दिग्विजय?

दिग्विजय का राज्यसभा में कार्यकाल नए वर्ष के आरंभ में खत्म होने जा रहा है और वे तीसरी बार राज्यसभा में जाना चाहते हैं

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 दिसंबर। संघ/भाजपा की तारीफ करने पर हुई आलोचना के बाद, सिंह अब लीपा-पोती में लगे हैं। उन्होंने कहा कि उनकी तारीफ केवल आरएसएस/भाजपा के संगठनात्मक अनुशासन और संरचना के विस्तार तक सीमित थी, यह स्पष्ट करते हुए कि उनका सैद्धांतिक विरोध अभी भी बरकरार है।

लेकिन जो नुकसान होना था, हो चुका है। कहा जा रहा है कि दिग्विजय द्वारा की गई संघ/भाजपा की तारीफ असल में एक सौदेबाजी है, ताकि वे राज्यसभा के तीसरे कार्यकाल को सुनिश्चित कर सकें। दिग्विजय सिंह का राज्यसभा का दूसरा कार्यकाल अगले साल की शुरुआत में समाप्त हो रहा है, और कई कांग्रेस नेता जैसे कमलनाथ और मीनाक्षी नटराजन उनकी सीट के लिए प्रमुख दावेदार माने जा रहे हैं। मध्य प्रदेश में भी सिंह को जीतू पटवारी और उमंग सिंघार जैसे नेताओं से विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

- दिग्विजय सिंह का कार्यकाल खत्म होने से रिक्त होने वाली सीट के कई दावेदार हैं, जैसे कमलनाथ, मीनाक्षी नटराजन आदि और फिर मध्य प्रदेश में कांग्रेस के नेता जीतू पटवारी आदि भी दिग्विजय सिंह के विरोधी हैं।

राहुल गांधी से पार्टी में आंतरिक सुधार करने की अपील करने के एक हफ्ते बाद, वरिष्ठ कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने शनिवार को उस समय एक विवाद खड़ा कर दिया, जब उन्होंने आरएसएस/भाजपा के संगठनात्मक ढांचे की साफ-साफ शब्दों में सराहना करते हुए एक पुरानी तस्वीर साझा की।

आरएसएस/भाजपा के सबसे कठोर आलोचकों में से एक दिग्विजय सिंह द्वारा अप्रत्याशित तारीफ ने संघ-परिवार को खुश कर दिया है, जिन्होंने अक्सर कांग्रेस के ''पहले परिवार''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने अरावली विवाद पर लिया स्वतः संज्ञान

नई दिल्ली, 27 दिसंबर। सुप्रीम कोर्ट ने अरावली पहाड़ियों की परिभाषा में हाल ही में हुए बदलाव से पैदा हुई चिंताओं पर स्वतःसंज्ञान लिया है। ऐसी आशंका है कि बिना रोक-टोक के

- सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय वेकेशन बैंच सोमवार 29 दिसम्बर को मामले पर विचार करेगी।

माइनिंग और गंभीर पर्यावरण नुकसान का रास्ता खुल सकता है। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जे के महेश्वरी और जस्टिस ए जी मसीह की वेकेशन बेंच सोमवार 29 दिसंबर को मामले पर विचार करेगी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बांग्लादेश में हिंदू, कसाई घर के जानवर की भाँति असहाय व भयतीत हैं

उनके पास बचने का कोई रास्ता नहीं है, न बचाने वाली कोई संस्था, जिसकी ओर बचाव के लिए देख सकें

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 दिसम्बर। बांग्लादेश के हिंदुओं को डर है कि अगर भारत अपनी नीतियों में बदलाव नहीं करता, तो उनके खिलाफ बड़े पैमाने पर हत्याएं हो सकती हैं।

चारों ओर से घिरे और बेबस महसूस कर रहे बांग्लादेश के हिंदू अपनी जान बचाने के लिए भारत से मदद की गुहार लगा रहे हैं। हिंदुओं ने वहां एक राजनीतिक पार्टी बनाई है और बांग्लादेश में चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा है।

कुछ प्रमुख लोग अब आने वाले संसदीय चुनाव के लिए उम्मीदवार तय करने में जुट गए हैं। बांग्लादेश माइनॉरिटी जातीय पार्टी (बीएमजेपी) उम्मीदवारों की सूची को अंतिम रूप दे रही है और नामांकन की अंतिम तिथि से पहले कागजात दाखिल करने की तैयारी कर रही है।

- थक हार कर, हिंदुओं ने एक राजनीतिक पार्टी बनाने का निर्णय लिया है, जो आगामी चुनाव में उम्मीदवार खड़ा करेगी।
- इस पार्टी ने, भारत सरकार से आग्रह भी किया है, बॉर्डर खोल दें, जिससे हिंदुओं के समक्ष सीमा पार जाने का विकल्प तो हो, अन्यथा प्रेशर कूकर जैसे उन पर प्रेशर बढ़ता ही जाता है और प्रेशर रिलीज़ करने का कोई रास्ता नहीं है।
- अगर भारी संख्या में हिंदू पलायन भी करते हैं तो भारत सरकार को यह स्थिति मान्य नहीं होगी और कुछ करने के लिए भारत सरकार बाध्य होगी। बांग्लादेश सरकार भी समझ रही है, यह अंजाम हो सकता है। अतः हिंदुओं को सुरक्षा प्रदान करने को मजबूर होगी।

यह नई पार्टी भारत से अपील कर रही है कि वह बांग्लादेश के प्रति अपनी नीति में तुरंत बदलाव करे। अब तक भारत केवल अवामी पार्टी से ही बातचीत करता रहा है और अन्य राजनीतिक दलों को नजरअंदाज किया गया है। अब अगर भारत देश की अन्य प्रमुख पार्टियों के साथ बातचीत शुरु करता है तो इससे फर्क पड़ेगा।

वैसे भी, हिंदू समुदाय देश में नरसंहार और बड़े पैमाने पर हत्याओं के डर में जी रहा है और उनकी रक्षा के लिए कोई ठोस संस्थागत व्यवस्था नहीं है। इस स्थिति में, हताश हिंदू लोग, राजनीतिक संगठनों के माध्यम से हिन्दुओं की रक्षा करने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए जो बुनियादी शर्तें होती

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)